गाँव की ओर

अंक : 01 : जुलाई–सितम्बर, 2019

गाँव बनेगा, देश बनेगा यह समझें, समझायें हम

क्रियान्वयन संस्था

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान चित्रकूट (उ.प्र.)

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान

भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पोस्ट–सीतापुर,
चित्रकूट–210204 (उ0प्र0)

दूरभाष : 9415310662

E-mail : abssscktt@gmail.com, abssscso@gmail.com,
Website : absss.in

सहयोग

ChildFund India

गाँव की ओर

|| नि:शुल्क सीमित वितरण हेतु ||

अंक : 01 : जुलाई-सितम्बर, 2019

प्रधान सम्पादक
राष्ट्रदीप

प्रबन्ध सम्पादक
आशीष कुमार

सम्पादक
गजेन्द्र

सम्पादक मण्डल
पूनम गुप्ता, रीना सिंह,
विश्वदीप, जयगोपाल
भारती

शब्दांकन
कुमार अरबिन्द

सम्पादकीय कार्यालय

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान
भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, सीतापुर
जिला–चित्रकूट (उ0प्र0) 210204
दूरभाष : 9415310660, 7054566040
E-mail : abssscktt@gmail.com,
abssscso@gmail.com,
Website : absss.in

इस अंक में

1.	अपनी बात	*राष्ट्रदीप*	3-4
2.	स्मृतिशेष श्री भागवत जी	*विश्वदीप*	5-7
3.	बुन्देलखण्ड में बूंद-बूंद पानी बचाना होगा	*राकेश*	8-11
4.	डूबते को तिनके का सहारा	दीपचन्द	12
5.	धरती-रक्षा का बड़ा अभियान जरूरी	*भारत डोगरा*	13-14
6.	अब भूखे नहीं सोते बच्चे	रीना सिंह	15-16
7.	एक ऐसा भी प्राथमिक सरकारी विद्यालय है	*गजेन्द्र सिंह*	17-18
8.	बचपन जीवन का सबसे खूबसूरत पहलू	*विद्यासागर बाजपेई*	19-20
9.	बचपन बचेगा, देश बढ़ेगा	*पूनम गुप्ता*	21-22
10.	शालू की सहयोग राशि से बची उसके पिता की जान	*भारती*	23-25
11.	पेयजल के लिए एक लघुप्रयास	राजाबुआ उपाध्यक्ष	26-27
12.	झोपड़ी से दिल्ली तक	*देशराज यादव*	28-29
13.	कौशल विकास का एक सच	*शिवाकान्त*	30
14.	मानिकपुर ब्लाक के कुछ गाँवों की कथा-ब्यथा	*देशराज यादव*	31-32

गीत

कई बरस के बाद गाँव में सुआ आया है।
वो राग-रागिनी खेतों की,
वो रामायन चौपालों की ।
वो खिल-खिलाहटें पनघट की
वो ऊँची टेरें ग्वालों की ।
अब नहीं सुनाई पडती है सन्नाटा छाया है।
कई बरस के बाद गाँव में सुआ आया है।
औरों को रोटी देने को,
तैनात रहा जो पहरों में ।
वो मेरा आधा गाँव गया,
रोटियाँ ढूँढने शहरों में ।
सुबक-सुबक कर अम्मा ने ये हाल बताया है।
कई बरस के बाद गाँव में सुआ आया है।
पूरे देश के पोषण का,
आधार तो अपनी खेती है ।
पा जाए गंध पसीने की,
तो माटी सब कुद देती है।
लौटो, आओ, चलो, गाँव ने तुम्हे बुलाया है।
कई बरस के बाद गांव में सुआ आया है।

प्रो. प्रणय
गांव : बगदरी
मानिकपुर, चित्रकूट 30प्र0
हिन्दी भाषा, मर्मज्ञ

अपनी बात

राष्ट्रदीप

''गाँव की ओर'' कई वर्ष बाद फिर आपके पास है। अपनी बात आप तक पहुँचाने का यह माध्यम मात्र है। गाँव की ओर इसलिए भी कि गाँव धीरे-धीरे शहर की ओर दौड़ रहे हैं। गाँव में सुरक्षा, सम्मान, रोजगार, अच्छी शिक्षा, चिकित्सा का संकट है। जो जितना साधन सम्पन्न है वह उतना ही गाँव से दूर जा रहा है। कमजोर वर्ग भी शहर में किराये का कमरा लेकर रह रहा है। काम की खोज में गाँव की जवानी सुदूर शहरों में खप रही है। शहरों का आवास-प्रवास जवानी को बुढ़ापे की ओर ले जा रहा है। कार्य स्थलों पर मजदूरों के साथ जो दुर्घटनाएं घटित हो रही हैं, वे चिन्ताजनक हैं, शर्मनाक हैं तथा क्रूरता की पराकाष्ठा का संकेत हैं। मारकुण्डी (डीपो) के दो मासूम हरियाणा के एक गाँव में पोकलैण्ड मशीन की टक्कर से गिरी दीवाल के नीचे दबकर दम तोड़ दिए, कुछ रुपये थमाकर सादे कागजों में हस्ताक्षर कराकर माता-पिता को वापस भेज दिया गया। क्रूर व्यवस्था का यह एक उदाहरण है। यह एक घटना नहीं ऐसी कितनी घटनाएं ज्ञात, अज्ञात घटती रहती हैं, जिन्दगी चलती रहती है। किसी का किसी से मतलब नहीं।

मानिकपुर से ऊँचाडीह का गरीब सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ नहीं पा रहा है। राशनकार्ड, आंगनवाड़ी की सेवा, गायब सचिव, प्रधानी पर कब्जा आदि ऐसी समस्याएं हैं, जिनका कोई समाधान गरीब के पास नहीं है। यही स्थिति पत्रकार पुरवा की भी है। पत्रकार पुरवा वह गाँव है जिसको तत्कालीन जिला बाँदा के पत्रकारों ने अपनी पद यात्रा के समय नामकरण किया था, गोद लिया था। अपने नाम के इस गाँव की ओर पत्रकारों का ध्यान जाना चाहिए ताकि एक गाँव तो समस्या मुक्त रह सके।

मानिकपुर, मऊ ब्लाक का पठारी भाग जहाँ कोल आदिवासी निवास कर रहे हैं, जिन्हें जनजाति का भी दर्जा आज तक प्राप्त नहीं, वे विषम विसंगतियों के शिकार हैं। सरकारी योजनाएं यहाँ दम तोड़ती हैं, दलाल यहाँ फलफूल रहे हैं। पेयजल का भयंकर संकट आजादी के इतने वर्षों के बाद भी यहाँ यथावत है। शिक्षा की गुणवत्ता का संकट असाध्य है, पुराना बिगड़ा रोग है। स्वास्थ्य सुविधा हेतु प्रत्येक न्याय पंयायत में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भव्य भवन के रूप में 2005 से अडे, खडे हैं। सारे भवन वीरान हैं, उजड़ रहे हैं। यदि इनका उपयोग नहीं होना था तो जनधन के साथ खिलवाड़ क्यों किया गया? ऐसे अनगिनत सरकारी भवन है, जिनका कोई उपयोग नहीं है। किसी भी सरकारी कर्मचारी को गाँव में रहना नहीं,

कभी-कभी दिन में दर्शन गाँव में दे दें यह गाँव का सौभाग्य होता है। हम अपने दायित्व के प्रति कब उत्तरदायी होंगें? यह देश का दुर्भाग्य है कि अधिकांश नौकरसाही का राष्ट्रीय दायित्व बोध, बीमार है। लोक सेवा का स्व स्फूर्त भाव जन-जन के मन में कब आयेगा, कैसे आयेगा, कौन लायेगा? कानून समस्या का समाधान नहीं बन पा रहे। संस्कारों से सम्पन्न, मानवीय चेतना से भरपूर मानव कहाँ से आयें? ऐसे मानव के बिना धरती बीमार हो रही है। शिक्षा एक सहारा बन सकती है। शिक्षा विधि से मानव निर्माण का कार्य हो सकता है। शिक्षा ही एक मात्र आशा की किरण है किन्तु वर्तमान शिक्षा नहीं। इस शिक्षा से भी शोषणकर्ताओं की फौज ही तैयार हो रही है। फिर कैसी शिक्षा? शिक्षा के क्षेत्र में दिल्ली सरकार का एक प्रयास विश्व की आँखे खोल रहा है। काश! भारत के अन्य प्रान्त भी ईमानदारी से इसे देख पाते। भारत सरकार का भी ध्यान इस ओर जा सके, देश का सौभाग्य होगा। ''गाँव की ओर'' आपका आशीष चाहता है, आपका मार्गदर्शन मांगता है। आशा है आप हमें जगाते रहेंगे।

स्मृति शेष श्री भागवत जी

विश्वदीप

पाठक बन्धु ! ''गाँव की ओर'' 10 वर्षों के पश्चात् अपने नये अनुभव के साथ आपके बीच है। गांव की ओर पहले भी आपके द्वारा बहुत पसन्द की गई, यह हम सब के लिए बहुत ही हर्ष का विषय था। गाँव की ओर जु0 से सित0 का है तो इस में अगस्त भी शामिल है। अगस्त का जिक्र इसलिए भी करना जरूरी है क्यों कि गत वर्ष अगस्त की 9 तारीख संस्थान परिवार के लिए बहुत बडा आघात थी। संस्थान के निदेशक एवं इस पुस्तक के प्रधान सम्पादक भागवत प्रसाद जी हम सबको इसी लोक में अकेला छोड़ चले गये थे। गत माह उनकी पुण्य तिथि संस्थान परिवार द्वारा मनाई गई एवं उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प भी लिया गया। उन सपनों में ''गाँव की ओर'' भी बहुत महत्वपूर्ण था। आज मैं अपने पूरे परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा हूँ।

''गाँव की ओर'' का लोकप्रिय होना, सबका प्यार मिलना श्री भागवत प्रसाद के ही निरन्तर प्रयास का परिणाम था। सिर्फ गाँव की ओर ही नहीं, संस्थान को एक नई कीर्ति, पहचान आपके ही प्रयासों का फलन है। आज यहाँ आपके द्वारा किये गये सफल प्रयासों को

संक्षिप्त में रखना हम सब की ओर से सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

आपके नेतृत्व में संस्थान ने हर क्षेत्र में अपना नाम, अपनी छाप एवं मिशाल कायम की है। बात वाटरशेड कार्यक्रम की हो, शिक्षा की हो, स्वास्थ्य एवं आजीविका आदि कुछ भी आपसे अछूता नहीं रहा। हर क्षेत्र पर कार्य एवं प्रयास के बारे में बहुत ही बारीकी से सोंचकर उसको करना आपका स्वभाव था। जल संरक्षण पर बहुत ही गहराई से आपने कार्य किया, इसके चलते देश के बड़े एवं प्रतिष्ठित संस्थान ''फिक्की'' ने आपको सम्मानित भी किया। जल संचयन प्रबंधन के श्रेष्ठ प्रयासों में देश में दूसरा स्थान मिला। मानिकपुर के पाठा इलाके में बने चैकडैम, कुएं एवं तालाब इसके उदाहरण हैं। जहाँ आज भी भीषण गर्मी के दिनों में पानी प्राप्त किया जा सकता है। पीने के पानी को लेकर भी कुछ गांवों में कार्य किये गये। इस अंक में पढा जा सकता है।

आजीविका पर टीकमगढ़ में किसानों के बीच बहुत सफल कार्य किये गये। आज वहां का किसान अपनी कृषि से अच्छी आय कमा कर अपना एवं अपने पूरे परिवार का भरण पोषण कर रहा है। उनके बीच संस्थान के द्वारा आपके नेतृत्व में कार्य किया गया। आपकी सूझ बूझ का परिणाम था कि वहाँ का किसान आज भी कृषि से अपनी आजीविका बेहतर ढ़ग से चला रहा है। आज वे अपनी आय के बारे में चर्चा, कर आपको याद कर अपनी आंखे नम कर लेते हैं। ऐसे ही सफल प्रयास बरगढ़ में किये जा रहे हैं कुछ सफल प्रयास देखे जा सकते हैं।

''स्वस्थ्य शरीर स्वस्थ्य मस्तिष्क या विचार

का आधार है'' इस वाक्य पर आपका बहुत ही गंभीर चिन्तन था। इसी के चलते मानिकपुर के पाठा में स्वास्थ्य पर भी कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं कुछ आंगनबाडी केन्द्रों के माध्यम से कुपोषित बच्चों के पोषण हेतु भी लगातार प्रयास जारी हैं। मातायें, बहने कैसे स्वस्थ्य रहें, उनको समय-समय पर संस्थान द्वारा संचालित परामर्श केन्द्र की मदद मिले। यह आपकी ही सोंच थी, विचार था जो धीरे-धीरे अच्छे परिणाम दे रहा है।

हर क्षेत्र पर कार्य हो तो सबसे महत्वपूर्ण कार्य कैसे छूट सकता है। क्योंकि शिक्षा ही एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। संस्थान ने अपनी स्थापना के बाद से ही शिक्षा पर कार्य प्रारम्भ कर दिया था। शिक्षा के कार्य को हर बच्चे तक पहुँचाने का कार्य भी संस्था द्वारा किया गया। आपने शिक्षा को भी अपनी अच्छी सोच एवं विचार में रखा। उस पर पहले से और अधिक प्रभावी रीति से कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम में चाइल्ड फण्ड का भी भरपूर सहयोग मिला। 2 वर्ष पहले ही विद्यालय के दूर होने के कारण जो बच्चियां विद्यालय जाना बन्द कर देती थीं उनको सायकिल का सहयोग कर पुनः विद्यालय से जोडने का कार्य आपकी ही सोंच थी। गाँव में बिजली नहीं अस्तु उन्हें ऊर्जा लैम्प दिये गये।

ऐसे कई सफल और उपयोगी कार्य देखकर बहुत ही प्रसन्नता होती है। लाभान्वित लोग जब उनको याद करते हैं, उनके व्यक्तित्व की चर्चा करते हैं, उनकी बातों से मिली सीख को बताते हैं, यह सब सुनकर गर्व होता है। उनका स्मरण, उनके विचारों का चिन्तन आगे कार्य करने का बल प्रदान करता हैं।

संस्थान परिवार की ओर से पुस्तक का प्रथम अंक आपको समर्पित है। आप की सोंच आज फलीभूत हो रही है। हम आपके स्वप्न को साकार करेगें।

बुन्देलखण्ड में बूंद-बूंद पानी बचाना होगा

❑ **राकेश,** झांसी (सामाजिक कार्यकर्ता)

वीर भूमि, समृद्धि भूमि, गौरवशाली बुन्देलखण्ड का इतिहास अब वर्तमान के भूखे, प्यासे, किसान आत्महत्या के लिये कुख्यात बुन्देलखण्ड में तब्दील हो चुका है। ऐसा नही है कि यहां कभी प्राकृतिक संसाधनो की कमी रही है या फिर अभी कमी है, बल्कि हम बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक संसाधनो विशेष रूप से पानी के प्रबंधन, बागवानी एवं समृद्ध परंपरागत खेती के प्रबंधन के कौशल को आगे सहेज पाने में पूर्ण रूप से असफल हुए हैं। साथ ही वन संपदा को हमने भारी नुकसान पहुचाया है। पानी के प्रबंधन के कौशल को सहेजा नही, आगे नही बढाया ये तो कुछ हद तक ठीक था, पर हमने उन संसाधनो को खतम करने में बर्बाद करने में भी कोई कसर नही छोड़ी बल्कि इन्हे बर्बाद करने की अमानवीयता की सारी हदे पार कर चुके हैं।

कहने को तो **केन, बेतवा, धसान, पहुज, चम्बल, यमुना** जैसी आधा दर्जन से भी अधिक पानीदार सदानीरा नदिया हैं जो मानव के पागलपन के कारण आज दम तोड़ रही है। अपना वास्तविक स्वरूप खो रही है। इन सभी बड़ी नदियों को पोषण प्रदान करने वाली एक दर्जन से भी अधिक सहायक नदियां; **जामनी, उर, चन्द्रावल, मन्दाकनी, जमड़ार, सजनम, छपरट, बीना, नरेन, सोनार, सिंध, गरारा** आदि या तो ये अपने अस्तित्व के लिये कराह रही है या फिर अपना अस्तित्व खो चुकी हैं।

प्राचीन काल से ही तालाब पानी प्रबंधन का सर्वोत्तम उदाहरण रहे हैं। तालाब केवल प्यास ही नही बुझाते थे बल्कि ये ग्रामीण आजीविका संवर्धन की रीढ़ भी थे। बहुत ऐसे समुदाय रहे है जो आज भी अस्तित्व में है जिन्हे मै पानीदार समाज कहता हूँ। जैसे ढीमर, धोबी, कहार, ग्वाल, पाल, अहीर, बंजारा आदि जिनकी आजीविका का साधन ही तालाब रहे हैं।

बुन्देलखण्ड में चन्देलकालीन तालाबो की चर्चा की जाये तो पूरे बुन्देलखण्ड में ऐसे तालाबो की एक बड़ी श्रंखला है। हजारों की संख्या में ऐसे तालाब आज भी है। यहां पर इन तालाबो को तलैया, ताल तथा सागर नामो से जाना जाता है। कुछ तालाब या सागर सैकड़ो साल बाद भी आज भी अपने पूर्ण वैभव के साथ खड़े है। कुछ अपना अस्तित्व खो चुके हैं और कुछ खोने वाले हैं। ये हजारो की संख्या मे तालाब ऐसे नही बन गये इनकी पूरी एक कहानी है। कहानी कुछ बनाने वालो की कुछ बनवाने वालो की। कुछ जाति समुदाय जिन्हे मै पानीदार समाज से सम्बोधन कर चुका हूँ। वे अपनी आजीविका सम्वर्धन की सुनिश्चितता हेतु लगातार पानीदार स्थानो की

खोज में रहते थे।

इधर चन्देल शासक जो कि अपने आधीन फैले बड़े भू-भाग से अधिक से अधिक राजस्व प्राप्ति हेतु ताकि वे अपने राज्य को और अधिक शक्तिशाली बना कोई बड़ी रणनीति के बारे अपने सलाहकारों से लगातार विचार विमर्श कर रहे थे। लोगों की आजीविका के साधनों को समझा गया तथा इन आजीविका के साधनो के उस स्रोत के बारे में जाना गया जिस पर मूल रूप से लोग निर्भर थे। फिर क्या, पानीदार समाज को और उनके अनुभवों को साथ लेकर निकले और सैकड़ो फिर हजारों की संख्या में तालाब बना डाले। उन तालाबों के किनारों पर छोटे बड़े, गांवों, नगरों और शासन सत्ता के केन्द्रों की स्थापना हुई। लोग बसे और उनकी आजीविका सुनिश्चित हुई जिससे तत्कालीन शासन को अच्छा राजस्व मिलने लगा और चन्देल रियासत उस समय की सबसे धनाढ्य रियासत हो गयी। लोगों का मानना था कि चन्देल राजाओं के पास कोई ऐसा पारस पत्थर है जिसके किसी भी वस्तु पर छुआने भर से सोने में तब्दील हो जाती है। एक कहावत जो यहां के जनश्रुति में आज भी है कि **'पारस पथरी गढ़ महुबे में लोहा छुअत सोन हुई जाय'** ये पारस पथरी उनके द्वारा पानीदार समाज के अनुभवों एवं कौशल के सहयोग से बनवाये गये विशाल तालाब ही थे।

महोबा को अपनी सत्ता का केन्द्र बनाने के पहले चार बड़े सागरों (कीरत सागर, मदन सागर, कल्याण सागर एवं विजय सागर) का निर्माण नगर के चारों कोनों में कराया गया।

न्यूनतम संसाधनो, बड़े इरादो के साथ इन तालाबो को जीवन्तता प्रदान करने हेतु एक ईमानदार मुहिम ''सृजन'' ने शुरू की। इस मुहिम के साथ **''सृजन''** ने जहां पानी एवं मिट्टी को समझने वाले देश के बड़े विशेषज्ञों को साथ लिया वही मानव कल्याणकारी कार्य से जुड़े देश के विभिन्न भागों से लोगों को इस मुहिम के साथ जोड़ा। **''सृजन''** का विश्वास है कि हम कोई मॉडल तो खड़ा कर सकते हैं लेकिन उस मॉडल को गुणात्मक विस्तार सरकार ही दे सकती है। इसलिये इस मुहिम में सरकार का भी सहयोग लिया गया। यह भी सोचा गया कि यह ईमानदार पहल स्थानीय लोगों, संगठनों के बिना सम्भव नही है क्योंकि जीवन्तता केवल तालाबो को नही प्रदान करनी थी इन तालाबो के प्रति जन समुदाय की समझ एवं चेतना को भी जीवन्तता प्रदान करना था। इसीलिये स्थानीय संगठनो को भी महत्व देते हुए संगठनो का एक संगठन बनाया। स्थानीय बुद्विजीवियों, इतिहासकारों को भी साथ लिया। तालाबो, जल एवं मिट्टी से सम्बन्धित साहित्य को इक्ट्ठा किया गया।

गाँव-गाँव जाकर जब ऐसे तालाबों के बारे में लोगो से मिलकर बातचीत की गई तो लोगो में पानी और तालाब को लेकर वही पुराना जज्बा देखने को मिला जिसकी मै कल्पना करता हूँ। स्थानीय संगठनों, लोगों एवं सरकारी अधिकारियों की मदद से ऐसे तालाबो को खोजा गया जिनमें काम की आवश्यकता थी। तकनीक सम्पन्न लोगो की मदद से तालाबो पर होने वाले कामो को पहचाना गया।

स्थानीय सामाजिक संगठनो एवं लोगो की मदद से इस वर्ष मानसून आने के पहले तक बुन्देलखण्ड के सात जिलों (छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, ललितपुर, महोबा, हमीरपुर एवं चित्रकूट) में 55 तालाबों की **गाद** हटाने का कार्य किया गया। इस मुहिम की विशेषता यह रही कि स्थानीय आम जन ने भी कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया इसका कारण है पानी सबकी आवश्यकता है। सैकड़ो वर्षों से बहकर जमा हुई **मिट्टी स्थानीय किसानों ने अपने खर्चे पर अपने खेतों पर डाली**। उनका मानना है कि तालाबों में जमा हुई यह गाद उनके खेतों के लिये सोना है इसके कई पुराने अनुभव उनके पास हैं। मानसून आने के पहले तक काम चलता रहा किसानों में अपने खेतों में अधिक से अधिक गाद डालने की होड़ लगी रही। इस कार्य का दोहरा फायदा हुआ जहां एक ओर तालाबो की क्षमता बढ़ी वहीं किसानों के खेतों की मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ।

इस पूरे अभियान के दौरान कई खट्टे मीठे अनुभव भी मिले। एक बहुत ही मजेदार अनुभव यहां लिखता हूँ। काम के दौरान थोड़ा पढ़े लिखे जागरूक लग रहे लोग आयें। काम की पूरी

जानकारी ली। अपने तरीके से भी पता लगाया। सब कुछ सही पाने के बाद, सभी संदेह मिटाने के बाद भी गलत-सलत जानकारी जुटाकर अखबार बाजी की। इतना करने के बाद भी काम नहीं रुका तो बल प्रयोग किया कहीं दारू पीकर मशीन आपरेटर के साथ गाली गलौज एवं मारपीट किया तो कहीं मशीन के शीशे फोड़ दिये। जब बात की तो पता चला कि यहां जो भी काम होता है उसमें उनका हिस्सा होता है। बिना उनको फायदा पहुचाये इतना बड़ा काम कैसे हो रहा है? ऐसे सभी विद्रोहों का शांतिपूर्ण ढंग से स्थानीय लोगों की मदद से कहीं जरूरत पड़ी तो प्रशासन की मदद से निपटाया गया।

इस पूरे अनुभव से यह पता चलता है कि कुछ लोग इसलिये जागरूकता का ढोंग करते है कि गलत का पता लगाकर उसमें हिस्सेदार हो जायें। उनका इससे कोई मतलब नही की काम पारदर्शिता पूर्वक होना चाहिये। ऐसे नकारात्मक सोच के लोगो की संख्या समाज में लगातार बढ़ रही है। यह हमारे सामाजिक स्वास्थ्य के लिये बहुत ही खतरनाक है। ऐसे पथ विचलित लोगों को समझदार बनाने का कार्य भी हमारी वरीयता है। गाँव के तालाबों को उनका पुराना स्वरूप भी वापस लाना होगा। जिस तालाब का जितना क्षेत्रफल है, उसे वापस मिलना ही चाहिए। जो तालाब गायब हो चुके हैं, उनकी भरपाई काबिज लोगों से होनी चाहिए। नीचे स्तर का वह भृष्टाचार जिससे प्राकृतिक संसाधन प्रभावित हैं, सामान्य जन पीड़ित हैं, समाप्त होना चाहिए। **पानी बचाओ, पानी बढ़ाओ, पानी का सदुपयोग अभियान चलाओ की आज आवश्यकता है। तालाब बचेंगे तो गाँव की संस्कृति बचेगी।**

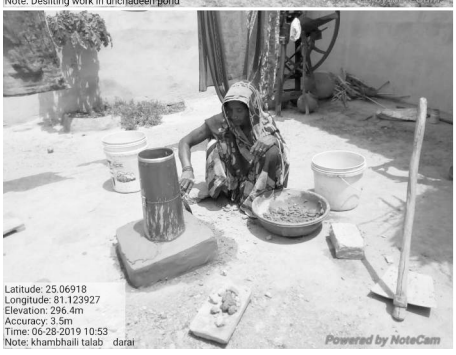

डूबते को तिनके का सहारा

❑ दीपचन्द्र

पाठा के वनांचल में जन्मी दिव्या कोल आदिवासी परिवार की बेटी है। दिव्या अपने चार भाई-बहनों में सबसे छोटी है। दिव्या को संस्थान द्वारा संचालित **''समेकित बाल विकास परियोजना"** से एक छोटी सी धनराशि सहयोग के तौर पर मिली थी, उससे उसका एवं परिवार का जीवन ही बदल गया। दिव्या प्रतिदिन 12 किमी0 दूर से मानिकपुर कक्षा-2 में पढने स्कूल के वाहन से आती-जाती है। उसके दो भाई व एक बहन गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। दिव्या के मानिकपुर आकर पढ़ने से अगल-बगल रहने वाले अन्य आदिवासी परिवारों ने भी अपने बच्चे उसके साथ पढ़ने के लिए भेजना शुरू कर दिये हैं।

दिव्या संस्थान द्वारा स्पान्सर किए गये 106 बच्चों में से एक है। दिव्या का फार्म भरकर जब समेकित बाल विकास परियोजना के मुख्य कार्यालय दिल्ली भेजा गया तो इसकी स्थिति-परिस्थिति को जानकर 28 जनवरी 2017 को उसे **जिम** एवं **जान** नाम के एक परिवार ने अपना बना लिया और उसके परिवार का आर्थिक विकास करने हेतु 500 डालर (32525 रू0) भेजा। इतनी धनराशि पाकर दिव्या की माँ ने कहा कि वह अब लकड़ी बेचना छोड़कर बकरी पालन का कार्य करेंगी। दिव्या की माँ ने इस धनराशि से 7

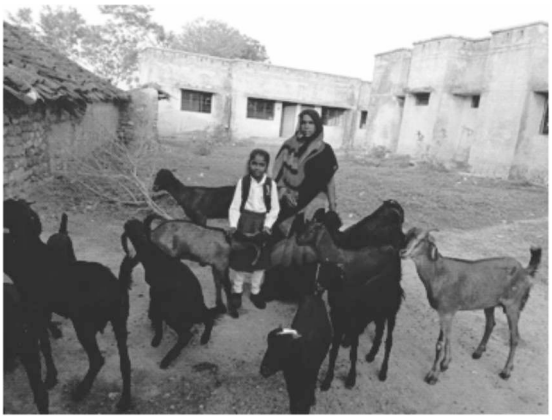

बकरियां खरीदा। एक वर्ष बाद अब उसके पास 15 बकरियां हैं। बकरी का दूध गाँव के लोग ही अपने छोटे बच्चों को पिलाने के लिए खरीद लेते हैं, जिससे उसके घर का खर्चा हमेशा चलता रहता है। पिता भी दैनिक मजदूरी 200 से 250 रू0 तक की माह में कम से कम 20 दिन कर लेते हैं जिससे घर चलाने में अब कोई दिक्कत नहीं आती। पहले बहुत परेशानी होती थी पिता रमेश मजदूरी पर चले जाते थे, माँ लकडी लेने जंगल चली जाती थी। घर में बड़ी बहन दीपा अपनी पढ़ाई छोड़कर घर में छोटे बच्चों की देखभाल करती थी। कभी-कभी तो पूरे परिवार को पलायन पर जाना पड़ता था लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब माँ सुबह खाना बनाकर गाँव के आस-पास बकरियाँ भी चरा लेती है, घर भी देख लेती है। इस समय सभी भाई-बहन पढ़ रहे हैं, अपना विकास कर रहे हैं। इसी को कहते हैं, डूबते को तिनके का सहारा।

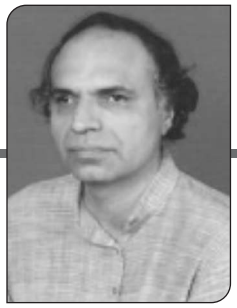

धरती-रक्षा का बडा अभियान जरुरी

❑ भारत डोगरा

आज दुनिया के सामने वैसे तो अनेक गंभीर समस्याएं हैं पर इन सभी समस्याओं को प्रभावित करती हुई एक अधिक व्यापक समस्या यह है कि धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है। दूसरे शब्दों में, जिन स्थितियों में धरती पर बहुत विविधता भरा जीवन लाखों वर्षों से पनप सका, धरती की वह जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है।

इसकी एक वजह है ग्रीनहाउस गैसों का तेजी से बढ़ना जिससे धरती पर विभिन्न गैसों की विशेष अनुपात में उपस्थिति की स्थिति अस्त-व्यस्त होती है जिसके कारण यहां इतना विविधता भरा जीवन पनप सका है। ग्रीनहाउस गैसों (विशेषकर कार्बनडाई आक्साईड) की वृद्धि से विशिष्ट तौर पर जलवायु बदलाव की समस्या व धरती का औसत तापमान बढ़ने की समस्या भी जुड़ी है। इससे जुड़ी हुई बहुत सी अन्य पर्यावरणीय समस्याएं भी हैं जैसे जल-संकट, वायु प्रदूषण, खाद्य-सुरक्षा का संकट, वन-विनाश, जैव-विविधता का तेज ह्रास, खतरनाक रसायनों व उत्पादों का तेज प्रसार आदि।

दूसरा बड़ा संकट महाविनाशक हथियारों की मौजूदगी से है। एक ओर 14500 परमाणु हथियार मौजूद हैं, दूसरी ओर उनके आधुनिकीकरण पर अरबों डालर का निवेश हो रहा है। इतना ही नहीं, नए रोबोट हथियार तेजी से आ रहे हैं जो आगे चलकर संभवतः इससे भी बड़ा खतरा उत्पन्न कर सकते हैं और यहाँ तक कि मानवीय नियंत्रण से बाहर भी जा सकते हैं

इन सभी स्थितियों को समग्र रूप में देखें तो एक स्पष्ट स्थिति उभरती है कि हमारी धरती की जीवनदायिनी क्षमताओं के लिए मानवजनित कारणों से एक अभूतपूर्व संकट उपस्थित हो गया है जिसका समय रहते समाधान नहीं हुआ तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाएगी।

इस संकट के समाधान के लिए हमारे पास बहुत समय नहीं है। विश्व के सबसे प्रतिष्ठित जलवायु वैज्ञानिकों ने तो स्पष्ट चेतावनी दे दी है कि धरती के औसत तापमान वृद्धि को 1.5 से. तक रोकने के लिए जो बहुत व्यापक बदलाव चाहिए, वह वर्ष 2020-30 तक पूर्ण कर लेने चाहिए अन्यथा यह संकट मानव नियंत्रण से बाहर हो जायेगा। परमाणु हथियारों का उपयोग एक बार हो गया तो यह कहां जाकर रुकेगा, कोई सोच नहीं सकता है। रोबोट हथियार एक सीमा से आगे बढ़ गये तो उन पर नियंत्रण लगाना संभव होगा कि नहीं यह एक उलझा हुआ विषय है।

विभिन्न प्रजातियों का लुप्त होना मौजूदा गति की तेजी से बढ़ता रहा है तो धरती पर जीवन का ताना-बाना किस हद तक अस्त-व्यस्त हो जाएगा यह हम अभी कह भी नहीं सकते हैं।

अतः अब गहरी जरूरत इस बात की है कि धरती की रक्षा का समग्र कार्यक्रम विश्व स्तर पर बने और इसे उच्चतम प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इस उद्देश्य को सभी देशों को अपनाना चाहिए व इसे एक जन-अभियान या जन-आन्दोलन का रूप भी देना चाहिए।

अभी तक विभिन्न जन-आन्दोलनों व जन-अभियानों में न्याय, समता, अमन-शान्ति व लोकतंत्र के मुद्दों को अधिक महत्व मिलता रहा है। यह महत्व पहले की तरह बना रहना चाहिए। इन सभी उद्देश्यों को धरती पर जीवन-रक्षा की व्यापक जरूरत से जोड़ कर आगे बढ़ाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, धरती की रक्षा का व्यापक कार्य सबसे जरूरी है, पर हमें इसे न्याय, समता, लोकतंत्र व अमन-शान्ति की परिधि में व इन उद्देश्यों से जोड़ते हुए ही आगे बढ़ना है।

धरती-रक्षा की दृष्टि से यह समय बहुत संवेदनशील है अतः इस विषय पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए यह बहुत उपयोगी होगा कि 2020-30 को **'धरती-रक्षा दशक'** के रूप में विश्व स्तर पर मान्यता मिल जाए। इस तरह धरती-रक्षा के कार्यों के महत्व को और प्राथमिकता को बार-बार याद किया जाएगा व अधिक लोग इसके बारे में जान सकेंगे व इसके महत्व को समझ सकेंगे।

हालांकि इस तरह के अभियान अभी चल रहे हैं पर उनकी पहुँच बहुत कम लोगों तक है। यह देखते हुए कि धरती रक्षा के मुद्दों पर विभिन्न प्रमुख देशों की सरकारें समुचित ध्यान नहीं दे रही हैं यह और भी जरूरी हो जाता है कि एक बड़े जन-अभियान के रूप में ही धरती रक्षा के मुद्दों को विमर्श के केन्द्र में लाया जाए। जो मुद्दे सबसे महत्वपूर्ण हैं वे आज हाशिए पर क्यों हैं? यह एक ऐसा सवाल है जिसके बारे में आगामी दिनों में लोगों को कहीं अधिक सोचना होगा।

अब भूखे नहीं सोते बच्चें

❑ रीना सिंह रश्मि ''शिव''

मऊ ब्लाक के बरगढ़ क्षेत्र में जमिरा, नहर का पुरवा, पतेरी, भौंठी और खोहर में अति गरीब परिवारों के बच्चे अब भूखे नहीं सोते। पहले इन गाँवों में रहने वाले कोल आदिवासी एवं बसोर परिवार के बच्चे रोटी न मिलने पर भूखे ही सो जाते थे। परिवार में ऐसा कोई बंधा हुआ रोजगार नहीं था कि पूरे माह अपने बच्चों का पेट भर सकें। यहाँ के लोगों के पास नाम-मात्र की कंकरीली-पथरीली असिंचित भूमि है जिस पर फसल शायद ही कभी हो पाती हो। फसल न होने से यहाँ के लोग मजदूरी पर ही निर्भर रहते हैं। मजदूरी भी कभी मिलती है कभी वह भी नहीं मिलती है। महीने भर का औसत देखें तो लगभग 15 से 18 दिन ही काम मिल पाता है। इतने दिनों के काम से परिवार नही चल पाता जिससे महीने में कम से कम 2 या 3 दिन मजदूर परिवारों को भूखा ही सोना पडता है।

सबसे बडा संकट उन परिवारों को झेलना पडता है जिनके ऊपर बूढ़े माता-पिता और ज्यादा बच्चों का बोझ है। इसके अलावा यदि किसी परिवार का मुखिया खतम हो गया है तो उसकी विधवा को अपने बच्चे पालने में भारी मुसीबत उठानी पडती है। अकेली विधवा चाहे अपने बच्चे पाल ले या अपने सास-ससुर की देखभाल करले। ऐसी परिस्थिति में परिवार के बच्चों को रोटी मिलना मुश्किल हो जाता है। भरपेट रोटी ना मिलने से इन परिवारों के बच्चे हमेशा कुपोषण के शिकार भी होते रहते हैं। जिससे इनका शारीरिक एवं मानसिक विकास नहीं हो पाता। कुछ बच्चे तो असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में परिवार छिन्न-भिन्न हो जाता है। टूट जाता है। जीवन की

सारी आशा-अभिलाषा भी मर जाती है। ऐसे परिवारों को दुबारा खड़ा करने में भारी मशक्कत करनी पड़ती है।

उपरोक्त पाँच गाँवों की परिस्थिति देखकर संस्थान ने इन गाँवों में महिलाओं का सखी समूह बनाया। समूह की बैठक में इस समस्या के समाधान पर चर्चा की गयी। समाधान में सुझाव आया कि यदि गाँव की महिलाएं अपने-अपने पड़ोस में एक-एक मुट्ठी अनाज इकट्ठा करें और उसे बैठक में साथ लेकर आएं और यहाँ जमा करें तो यही गल्ला एक अनाज बैंक के रूप में स्थापित हो सकता है। इस बैंक से हम जरूरतमंद परिवारों को अनाज देकर उनके परिवारों को भूख से बचा सकते हैं। अनाज लेने वाला परिवार बैंक को दो माह में थोडा-थोडा अनाज वापस लौटा देगा।

इस प्रस्ताव पर सभी समूहों की सहमति के आधार पर अनाज बैंक बनाया गया है। इस समय 5 गाँवों में एक-एक अनाज बैंक स्थापित हो चुका है। अब तक 1 कुन्टल 95 किग्रा0 अनाज आ चुका है जिससे गाँव के लोग अपनी बेटियों की शादी में या परिवार में खाने का अनाज न होने पर बैंक से अनाज लेना शुरू कर दिए हैं। अनाज बैंक में गेहूँ, चावल, दाल, नमक, का संकलन किया जाता है ताकि परिवार को खाने के लिए संतुलित भोजन मिल सके। अभियान के इस एक सकारात्मक प्रयास के कारण अब बच्चे भूखे नहीं सोते।

परहित सरिस धर्म नहि भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधिमाई।

एक ऐसा भी प्राथमिक सरकारी विद्यालय है

❑ **गजेन्द्र सिंह** (सामाजिक कार्यकर्ता)

आइना

मानिकपुर नगर पंचायत रुलर में एक प्राथमिक विद्यालय है जिसकी चमक-दमक, साफ-सफाई एवं बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता देखकर यह पता ही नहीं चलता कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय है। इस विद्यालय में दो शिक्षक व एक शिक्षामित्र सहित कुल तीन शिक्षक कार्यरत हैं। इस विद्यालय में कक्षा 1 से लेकर 5 तक के कुल 120 बच्चे पढते हैं। जो जिस स्तर का बच्चा है, आज उसे उतना सब कुछ आता है जितना उस कक्षा के बच्चे के लिए आवश्यक है। कक्षा 1 के बच्चे स्वर, व्यंजन और गिनती लिख लेते हैं। कक्षा 2 के बच्चे जोड, घटाना, गुणा, भाग लगा लेते हैं। किताब भी पढ़ लेते हैं। कक्षा 3 के बच्चे चारो प्रकार की अंग्रेजी के अक्षर लिख-पढ़ लेते हैं। गुणाभाग, जोड-घटाना, भिन्न के कठिन सवाल तक हल करने में सक्षम हैं। चौथी, पाँचवी के बच्चे जहाँ कठिन से कठिन सवाल हल करते हैं वहीं हिन्दी के कठिन शब्दों को लिख पढ लेते हैं। इतना ही नहीं कक्षा में दी गई अंग्रेजी की किताब धारा-प्रवाह पढ़ते हैं। यहाँ के प्रधानाध्यापक चन्द्रशेखर आजाद विद्यालय में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले बच्चों से मिलवाते हैं। अपनी ओर से कहते हैं कि वह उनके बच्चों से कुछ न कुछ पूँछे-जानें कि उनकी मेहनत कितनी साकार हुई है या अभी उन्हें कहाँ किस विषय पर मेहनत करने की आवश्यकता है। उपस्थिति यहाँ हमेशा 120 बच्चों में 83% से ऊपर रहती है। अगल-बगल के सभी लोग अब अपने बच्चे प्राइवेट के

इंगलिश मीडियम के विद्यालय में नहीं भेजते वह प्राथमिक विद्यालय ही भेजते हैं। आजाद जी सभी बच्चों का हमेशा ख्याल रखते हैं। यदि कोई बच्चा किसी दिन स्कूल नहीं आता तो वह उसका पता करने उसी दिन उसके घर पहँच जाते हैं।

स्कूल में सूत्र वाक्य, महत्वपूर्ण जानकारियॉ, पशु-पक्षियों एवं पेड-पौधों के अच्छे से चित्रांकन किया गया है। बच्चों का एक छोटा सा पुस्तकालय है। बच्चों की अलग-अलग कक्षाएं हैं एक हाल है। रसोईघर साफ-सुथरा है। पीने के पानी की अच्छी व्यवस्था है। शौचालय साफ-सुथरा है। खेल के मैदान में चारो तरफ बाडन्ड्री के किनारे-किनारे अलग-अलग प्रजाति के पौधे लगे हैं। सब मिलाकर देखें तो वातावरण बच्चों के अनुकूल है, अनोखा है।

शिक्षा क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को इस विद्यालय की प्रगति और मेहनत को देखना चाहिए। यदि इस विद्यालय से हम प्रेरणा ले सके तो भावी पीढ़ी का कल्याण होगा। इस विद्यालय के सभी शिक्षक वन्दनीय हैं। आज देश को ऐसे ही शिक्षकों की आवश्यकता है।

दुनिया का सबसे अच्छा काम शिक्षा है।
दुनिया का सबसे बड़ा व्यक्ति शिक्षा है।।

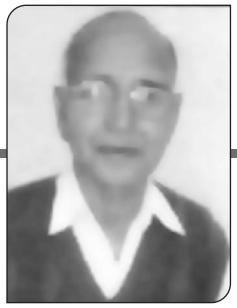

बचपन जीवन का सबसे खूबसूरत पहलू है

विद्यासागर बाजपेइ (सामाजिक कार्यकर्ता)

बचपन जीवन का सबसे खूबसूरत हिस्सा है। बचपन बहुत ही भोला-भाला, मासूम, नटखटपूर्ण, शरारतों एवं नादानी से भरा-पूरा होता है। बचपन में सबकुछ जान लेने, करने, आजमाने की ललक होती है। लेकिन आज की आर्थिक विकास की अंधी दौड ने बच्चों का सबकुछ छीन लिया है।

अधिकांश माता-पिता बच्चों के जन्म के बाद से ही उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति चिंतित हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि उनका बच्चा जितनी जल्दी हो सके पढ़ना-लिखना सीख ले, इसलिए वे उसे शीघ्र ही विद्यालय भेजना प्रारम्भ कर देते हैं। घर पर भी उसके ऊपर दबाव बनाते हैं। उसे अपने अनुरूप चलने के लिए बाध्य करते हैं। उन्हें बच्चे के बचपन को छिन जाने की तनिक भी चिन्ता नहीं है। उन्हें तो हर हाल में अपने सोचे हुए सपने-पलते नजर आना चाहिए। इसीलिए वे बच्चे के जीवन के लिए जरूरी सारे विकास को रोक कर सिर्फ उसकी शिक्षा पर ही जोर देते हैं और सुबह से शाम तक उसे पढ़ने की ही हिदायतें देते रहते हैं।

बच्चों की भी एक दुनिया होती है, उनकी भी अपनी रूचियाँ होती हैं। खुद की कल्पनाएं भी होती हैं। उनके खेल-खेलने, सीखने, समझने और निर्णय लेने के तौर-तरीके होते हैं जिनसे बच्चे अपने जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को जाने-अनजाने सीखते रहते हैं। बच्चों का जहाँ शारीरिक विकास होता है वहीं उसका सामाजिक, मानसिक विकास भी होता है। बच्चे हिल-मिलकर खेलते भी हैं, आपस में लड़ाई भी करते हैं। कुछ बच्चे बीच-बचाव करते हैं तो कुछ दोनो पक्षों का सुलह-समझौता भी करवाते हैं। बच्चे अगर कुछ खराब बातें सीखते हैं तो कुछ अच्छी बातें भी सीखते हैं। बच्चों को अच्छी-बुरी दोनों तरह की बातों से लड़ना-जूझना और सामना करना पड़ता है तभी वह जीवन के अनेक पहलुओं से परिचित हो पाते हैं।

एक शिक्षक के रूप में हमें बच्चों की रुचियों, क्षमताओं, प्रतिभाओं को समझकर उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। प्रोत्साहित करना चाहिए। अध्यापकों को उनकी हर छोटी से छोटी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनकर समाधान भी देना चाहिए। विद्यालय को इस प्रकार का परिवेश बनाना चाहिए कि बच्चा स्वतः ही विद्यालय जाने के लिए उत्सुक

हो जाये। विद्यालय से जब बच्चे का लगाव पैदा हो जायेगा तो वह स्वयं ही बहुत कुछ कर लेने की क्षमता बढ़ा लेगा। शिक्षकों को खुद ही सोंचना पड़ेगा कि ऐसा क्या करें ? जिससे बच्चा विद्यालय को अपना समझे, शिक्षकों को अपना माने और नियमित स्कूल आये और विद्यालय की प्रत्येक गतिविधियों में भाग ले और प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपने दैनिक जीवन में कर सके। बच्चों को शिक्षक के समक्ष अपनी बात रखने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। हर काम में टोंका-टाकी बन्द कर उन्हें भी किसी कार्य में निर्णय लेने देना चाहिए। सभी के साथ समानता का व्यवहार किया जाना चाहिए। कमजोर बच्चों के साथ सहानुभूति रखकर उनके पिछड़ेपन को दूर किया जाना चाहिए। विद्यालय उन्हें विद्यालय ही नहीं आनन्दालय की तरह लगने लगे। ऐसा वातावरण हमें सृजित करना चाहिए।

इसलिए संस्थान ने बच्चों के अधिकार, उनकी आवश्यकताओं और उनकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए "समेकित बालविकास परियोजना को संचालित कर बच्चों को शिक्षित, आत्मनिर्भर एवं हुनरमंद बनाकर एक समझदार अभिभावक बनाने का संकल्प वर्ष 2015 से लिया हुआ है। वर्ष 2015 से चित्रकूट के विकासखण्ड-मऊ की 11 पंचायतों के 40 मजरों के 710 बच्चों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं उनके परिवार की आय वृद्धि हेतु आजीविका सम्बन्धी कार्यों को शुरू किया था। इसमें बच्चों का वर्गीकरण तीन चरणों में किया गया है। जीवन चरण एक में 0 वर्ष से पांच वर्ष, जीवन चरण दो में 6 से 14 वर्ष, जीवन चरण तीन में 15 वर्ष से 24 वर्ष तक के बच्चों को रखा गया है। जुलाई 2017 से कार्यक्रम का विस्तार मानिकपुर ब्लाक के 11 ग्राम पंचायतों के 28 गांव के 1000 व 2018 में 500 और 2019 में 155 बच्चों को कार्यक्रम से जोड़ा गया है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका आदि से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चे एवं उसके परिवार की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है। बच्चों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभ मिलता रहे इसका भी निरन्तर प्रयास किया जाता है। संस्थान 11 बाल अभ्युदय व 16 बालवाडी केन्द्र चलाकर बच्चों को सुशिक्षित, संस्कारित, शारीरिक, मानसिक विकास कर एक समझदार मानव निर्माण में लगा हुआ है। इस अभियान में **चाइल्ड फण्ड इण्डिया** का सराहनीय सहयोग है।

बचपन बचेगा, देश बढेगा

❑ **पूनम गुप्ता** (सामाजिक कार्यकर्ता)

बच्चों की सुन्दर तोतली बोली, उसकी मासूमियत, शरारत भरी हलचलें, उसका रोना, मचलना, खुश होना, जिद करना, नखरे दिखाना, फिर मान जाना जैसी हरकतें दिल को सुकून देती हैं वहीं उसका रोना, बिलखना, बेचैन होना, अस्वस्थ होना जैसी असुरक्षित स्थिति देख सभी का दिल पसीज उठता है। बच्चा यदि स्वस्थ है तो पूरा परिवार स्वस्थ दिखाई पडता है। बच्चे के अस्वस्थ होने पर पूरा घर परेशान-बेहाल हो उठता है। बच्चा परिवार की नजरों से ओझल हुआ नहीं की सब के सब परेशान होकर इधर-उधर हेरना-ढूंढना शुरू कर देते हैं। यानि एक परिवार का पूरा आधार बच्चे पर ही टिका होता है। इसी संवेदना को भांपते हुए आज शासन-प्रशासन, सरकार एवं संस्थाएं अपना पूरा ध्यान बच्चे की सुरक्षा और उसके सम्पूर्ण विकास हेतु तत्पर नजर आती हैं। सारी योजनाएं भी बच्चों को केन्द्रित करके बनाई जाती हैं। बच्चे का हित यदि बाधित

होता है तो देश का हित बाधित होता है। बच्चा विकसित होगा तो देश अपने आप ही विकसित होगा। बच्चा असुरक्षित होगा तो देश स्वतः ही असुरक्षित हो जायेगा।

अगर हम सरकारी योजनाओं का ठीक उपयोग करें तो बच्चों की असमय हो रही मौतों को रोक सकते हैं। कुपोषण से ग्रस्त, मन्दबुद्धि हो रहे बच्चों को बचा सकते हैं। यह पहल हमें गर्भवती महिलाओं से शुरू करना होगा तभी हम अपने गांव, क्षेत्र और देश के लिए सुन्दर, स्वस्थ, सुडौल और तेजबुद्धि के बच्चे पा सकते हैं। महिलाओं में रक्ताल्पता के उपचार हेतु उनके खान-पान में बदलाव लाकर उन्हें स्वस्थ बना सकते हैं। कुछ रूढिवादी परम्पराओं के प्रति सावधान करके उन्हें बचा सकते हैं। गाँव देहात में अभी भी अशिक्षा के कारण बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य में ध्यान नहीं दिया जाता उनके साथ होने वाली घटनाओं को भाग्य का कसूर मानकर छोड दिया जाता है। समय रहते अगर हमने अपने बच्चों और महिलाओं पर ध्यान नहीं दिया तो हॉथ मलने के सिवाय हमारे पास कुछ नहीं बचेगा। आज समय की मांग है कि हम अपने और परिवार के स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील बनें गंभीर रहें।

वर्ष 2018 में संस्थान ने जब अपना स्वास्थ्य का कार्यक्रम मानिकपुर ब्लाक में शुरू किया तो देखा कि अधिकतर महिलाएं यहाँ रक्ताल्पता से पीडित है। उनके छोटे-छोटे बच्चे कुपोषित हैं जो बहुत ही कमजोर और दयनीय स्थिति में पहुँच चुके थे। संस्थान में उनकी सूची तैयार कर सरकारी अस्पताल में सम्पर्क किया। सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों ने टीम बनाकर 15 गॉवों में कैम्प लगाकर 1527 बच्चों और महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया। इस कैम्प के माध्यम से कुल 80 बच्चे कुपोषित पाये गये और उनमें 2 बच्चे अतिकुपोषित निकले जिन्हें तत्काल उपचार हेतु जिला सरकारी अस्पताल भेजकर उनका इलाज करवाया गया। शेष बच्चे यहीं सामुदायिक केन्द्र में इलाज करवाकर स्वस्थ हो चुके हैं। 115 बच्चे मौसमी बीमारी से पीडित थे जिन्हें साधारण उपचार कर वापस भेजा गया। आज सभी बच्चे स्वस्थ और सुरक्षित हैं।

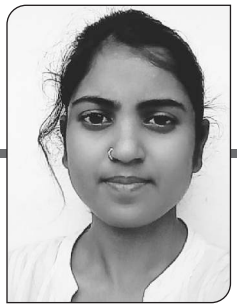

शालू की सहयोग राशि से बची उसके पिता की जान

❑ **भारती** (सामाजिक कार्यकर्ता)

शालू एक संरक्षकत्त्व प्राप्त बच्ची है। शालू के पिताजी का नाम श्री रामलखन एवं शालू की माँ का नाम रंजना है। शालू 3 भाई बहन हैं। ये हरिजनपुर गांव के निवासी हैं। शालू के पिता एक गरीब मजदूर हैं। जो दैनिक मजदूरी के रूप में काम करते हैं शालू एवं शालू का परिवार अपनी छोटी-मोटी मजदूरी पर अपना जीवन-यापन कर रहे थे। यह छोटा सा, प्यारा सा परिवार अपने छोटे से घर में हंसता खेलता रहता था। अपने घर एवं आंगन को सजाने के लिए उनके पास कोई कीमती सामान तो नहीं था परन्तु अपने छोटे से आंगन को छोटे-छोटे पौधे एवं फूलों से ही सजाये रखते थे। शालू के पिता दिनभर के लिए मजदूरी करने चले जाते थे फिर शाम को आने पर शालू एवं उसके भाई बहन दौड कर आते और उनसे लिपट जाते। शालू की माँ शाम को जो भी घर में रहता रूखा-सूखा वह बनाकर रखती फिर सारा परिवार साथ में भोजन करता। ऐसे ही करते करते समय बीतता गया। शालू के पिता की बुरी आदत शराब पीने की। पत्नी के समझाने पर उन्होंने कम तो किया था लेकिन पूर्ण रुपेण बन्द नहीं किया था। शालू की माँ बहुत परेशान रहती थी। घर का खर्च शालू के पिता की बुरी लत का खर्चा उनकी पीड़ा थी। शालू के पिता शराब भले ही पीते थे परन्तु वह दिल के बडे ही नेक इन्सान थे। वह अपने बच्चों की बहुत चिन्ता करते थे। मॉ के घर में न रहने पर

वह बच्चों को माँ की कमी महसूस नहीं होने देते थे। एक दिन दोनो पति-पत्नी ने सलाह बनाई कि यहॉ की मजदूरी में हमें बच्चों का पेट भरने में ही बडी मुश्किल है तो उनकी अच्छी शिक्षा-दीक्षा कैसे हो पायेगी ? कैसे हम अपने बच्चों को किसी अच्छे स्कूल में पढा-लिखा पायेंगे? इसके बाद ये सारी बातें सोचकर शालू के पिता ने निर्णय लिया कि अब वह बाहर सूरत, दिल्ली आदि शहरों में जाकर काम करेंगे। तीसरे चौथे दिन पैसों का बन्दोबस्त कर शालू के पिता सूरत जाने लगे। शालू की माँ बहुत दुखी थी। खुद को अकेली पाकर वह सोच रही थी कि यदि बच्चों को कुछ हो जायगा या कोई परेशानी हुई तो वह किसके पास जायेगी ? कौन उसकी सहायता करेगा ? शालू के पिता सूरत चले गये वहॉ उन्होंने सूरत में जाकर काम तलाश किया, वह काम भी करने लगे। 1 माह में उन्होंने बढिया काम किया फिर अगले माह से उन्हें अचानक बुखार आना प्रारम्भ हो गया। एक दिन आया दूसरे दिन आया इसी तरह करते करते 2 सप्ताह बीत गये। टेबलेट खाकर टाल देते कि वही पैसे मेरे परिवार के लिए होंगे। इसी तरह से वह बहुत कमजोर पड़ गये। उनके शरीर का खून पानी हो गया वह बिस्तर पर लग गये। बाहर तो उनकी देखरेख करने वाला भी कोई नहीं था। जब शालू

की माँ को उनके साथ रहने वाले व्यक्तियों ने सूचना दी तो शालू की माँ का कलेजा रूंध गया। वह जमीन पर घुटनों के बल गिर पड़ी और खूब रोयी। अकेली मां अपने बच्चों के पास रहे या अपने पति के पास रहकर उसकी देखभाल करे। करे तो आखिर क्या करे। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। किसी तरह उन्होंने जल्द ही गाँव वालों से पैसा इकट्ठा किया और अपने मायके में अपने भाइयों को फोन करके बताया उनके भाइयों ने उनका खूब सहयोग किया। शालू की नानी उनकी देखभाल करने के लिए आ गयी थी। भाई ने शालू की माँ को लेकर शालू के पिता के पास पहुँचे। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया तो डॉक्टर ने बताया कि इनके शरीर में ब्लड बिल्कुल भी नहीं है। यदि समय से खून न मिल पाया तो उनकी जान भी जा सकती है। डॉक्टर ने बताया कि 40 हजार रूपये लगेंगे। पता चला कि चिकनगुनिया की बीमारी से पीड़ित हैं। अचानक ब्लड बहुत कम हो गया। किसी भी तरह 7 बाटल खून चढ़ाने के बाद उनके शरीर में जान आयी। दवाई का खर्चा लोगों द्वारा लिये गये कर्ज से पूरा हुआ परन्तु उसमें भी उनके लिए पर्याप्त नहीं था। इसी बीच शालू के लिए कुछ सहयोग राशि भी आनी शुरू हो गयी। जिन्होंने शालू को गोद लिया था वो हर माह अपनी सहयोग राशि भेजते हैं। शालू के पिता के इलाज में भी शालू की अपनी धनराशि से दवाइयों, उनके लिए हरी सब्जी, फल-फूल आदि के खर्च में सहयोग मिला। शालू के पिता एक वर्ष तक काम करने लायक नहीं थे। शालू ने अपने पिता को बहुत सहयोग दिया वह बहुत खुश रहते थे। बहुत धन्यवाद एवं दुवाएं देते थे। उन्हें आशा की एक किरण मिल गयी थी। वह शालू को नियमित केन्द्र भी भेजते थे। शालू बहुत होशियार एवं प्रसन्न बदन बच्ची है। शालू भी बहुत खुश थी कि ईश्वर ने उन्हें इतने अच्छे लोग दिये जो कितने मुश्किल दिनों में बहुत ही सहायक सिद्ध हुए। अब शालू की हर माह कुछ सहयोग राशि आ जाती है जिससे शालू की पढ़ाई भी अब अच्छी तरीके से हो रही है। शालू के भाई बहनों का भी नामांकन करा दिया गया। अब सभी बच्चे स्कूल जाने लगे। शालू के माता-पिता भी बहुत प्रसन्न रहने लगे। अब उनका परिवार सुख-सानन्द से रहने लगा। शालू के पिताजी ने संस्थान को बहुत आभार प्रकट किया। संस्थान के कोई भी कार्यकर्ता गये तो वह बहुत सम्मान करते हैं। अब फिर से सभी के साथ वह उसी तरह प्रेमपूर्वक रहने लगे।

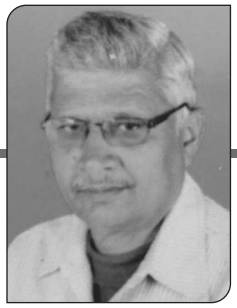

पेयजल के लिए एक लघु प्रयास

❑ **राजाबुआ उपाध्याय** (सामाजिक कार्यकर्ता)

उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र हमेशा से ही पानी की समस्या से जूझता रहा है। पानी की कमी के कारण ही यहाँ का जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त रहता है। पानी की यह समस्या अतिवृष्टि और अनावृष्टि के कारण ही बनी रहती है। इसीलिए गर्मी के समय में पीने के पानी का यहाँ भयंकर संकट खड़ा हो जाता है।

चित्रकूट जनपद बुन्देलखण्ड का एक हिस्सा है जिसका लगभग आधा क्षेत्र पहाडी एवं पठारी है। इस पठारी भाग में जिले के दो ब्लाक मऊ व मानिकपुर आते हैं। गर्मी के मौसम में यहाँ पर पेयजल की आपूर्ति टैंकरों के माध्यम से ग्राम पंचायतें व नगर पंचायतें करती हैं। क्योंकि यहाँ पर उपलब्ध जलस्रोतों का पानी गर्मी आते ही समाप्त हो जाता है। जिन जलस्रोतों में पानी मिलता भी है वहाँ लोगों की लम्बी-लम्बी लाइनें रात-दिन बराबर लगी रहती हैं। बच्चे से लेकर बूढ़े तक बूँद-बूँद पानी के लिए परेशान रहते हैं। सारा काम धंधा छोडकर पहले वह पानी की व्यवस्था करते हैं। लोग साइकिलों में डिब्बा बांधकर तीन-तीन किलो मीटर दूर से पानी लाकर पीते हैं। पानी को लेकर कभी-कभी तो मारपीट तक कर डालते हैं। लोगों की एफ.आई.आर. होती है, केस चलते हैं, गाँव में गुटबाजी होती है और गाँव का आपसी सामाजिक सौहार्द तक बिगड जाता है।

पीने के पानी की इस भीषण त्रासदी को देखते हुए संस्थान ने ऐसे 6 गाँवों का चयन किया है जहाँ की स्थिति अन्य जगहों से सबसे बद्तर और खराब थी। इन गांवों में रम्पुरिया, हाता, केकरामार, सकरौंहा, गिदुरहा, एवं उमरी मजरे प्रमुख थे। संस्थान ने इन गांवों के पेयजल संकट के निदान हेतु एक योजना तैयार की। तैयार योजना को चाइल्ड फंड-दिल्ली को दिया गया। चाइल्ड फंड संस्था ने 3 गांवों में संस्थान को क्रियान्वित करने के लिए और 2 गांवों में ग्राम पंचायत के माध्यम से बोर वेल बनाकर उसमें सोलर पम्प लगाकर गाँवों में पाइप लाइन डालकर सभी को कनेक्शन उपलब्ध करवा कर पानी देने की स्वीकृति प्रदान की।

संस्थान रम्पुरिया, हाता, गिदुरहा एवं केकरामार में बैठक कर जल उपभोक्ता समिति का गठन किया। उसमें पदाधिकारी नियुक्त कर उनका बैंक खाता खुलवाया। समिति के माध्यम से गाँवों में बोर करवा क्लोरो एनर्जी दिल्ली से सम्पर्क कर चारो गाँवों में सौर ऊर्जा के माध्यम से पानी निकाल कर वहीं पर 5000 ली0 की टंकी 12 फीट ऊँचे स्ट्रक्चर में रखवाकर घर-घर पाइप लाइन कनेक्शन देकर पानी की आपूर्ति प्रारम्भ की गई। इस कार्य से गिदुरहा के 54, केकरामार के 46, रमपुरिया के 49 और हाता के 35 कुल 184 परिवार सीधे लाभान्वित हो रहे हैं। गाँव में लाभान्वित परिवार कोल आदिवासी परिवार हैं। इन परिवारों ने जीवन में कभी कल्पना तक नहीं की थी कि कभी उन्हें उनके आंगन में स्वच्छ पानी उपलब्ध होगा। इन गांवों के आदिवासी पहले 1 से 1.5 किमी0 दूर स्थित जंगल के जलस्रोतों से लाकर पानी पीते थे। इस पानी को पीकर वह अक्सर बीमार ही बने रहते थे लेकिन जब से वह शुद्ध पानी पीने लगे तब से सारे परिवार ज्यादातर खुश और स्वस्थ रहते हैं।

गांवों में बनी जल उपभोक्ता समिति ने लाभार्थियों के साथ बैठक कर यह भी तय किया है कि प्रत्येक परिवार को प्रतिदिन पीने का पानी उपयोग कराने के लिए 1रुपये सहयोग राशि देनी होगी। यह समिति के खाते में जमा होगी, जिसका उपयोग सोलर पम्प बिगड़ने या अन्य टूट-फूट आने पर मरम्मत में होगा। यह प्रक्रिया जारी है।

- तुलसी की पांच पत्ती प्रतिदिन नित्य क्रिया से निपटने के बाद खाने से शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बनी रहेगी। घर पर तुलसी लगावें, मच्छरों से मुक्ति पावें। तुलसी का उपयोग चाय की भांति भी करें।
- नीम की पांच पत्ती सुबह खाने से रक्त तथा विश विकार से छुटकारा मिलेगा। नीम के पेड़ की नित्य उसकी दातून करें। नीम आपको जीवन भर निरोगी रखेगा। उसका रोपड़ भी करें।
- आंवले का एक फल प्रतिदिन खाने से शरीर की शक्ति यथावत बनी रहेगी। बुढ़ापा दूर रहेगा। आंवला सुखाकर, चूर्ण बनाकर, गुड मिलाकर खाइये, सदा बलवान रहेंगे। सारा परिवार सुखी रहेगा।
- बेल पत्र प्रतिदिन सुबह खाने से धातु विकार मिटेगा। शरीर में तेज बढ़ेगा। बेलपत्र, उसका सूखा चूर्ण भी अमृत है।
- गुरिज का काढ़ा या शरबत पीने से शरीर के सम्पूर्ण अंगों को बल मिलेगा। ज्वर, बुखार दूर रहेगा।
- सतावर का चूर्ण मिश्री या गुड के साथ मिलाकर खाने से शरीर की सभी नसों को शक्ति मिलेगी।
- त्रिफला (हर्र, बहेडा, आंवला)

  कातिक से अरू, माघ तक त्रिफला गुड संग लेय।
  भोजनान्त नित खाइये, शक्ति वृद्धि कर देय।।
  फागुन से अरू जेठ तक, त्रिफला मिश्री संग।
  प्रतिदिन नियमित खाइये, रहे निरोगी अंग।।

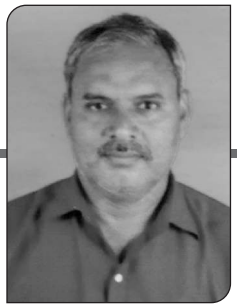

झोपड़ी से दिल्ली तक

❑ **देशराज यादव** (सामाजिक कार्यकर्ता)

बरगढ़ क्षेत्र की 10 आदिवासी बनवासी बालिकाओं को संस्थान ने कौशल विकास का प्रशिक्षण वर्ष 2018-19 में दिलवाया था। प्रशिक्षण के बाद 4 बालिकाओं का चयन दिल्ली की कम्पनियों में प्रशिक्षण के दौरान ही हो गया था। उसी समय इन चारों लडकियों ने दिल्ली जाकर कम्पनी के कार्य-व्यवहार को सीखा और आज एक कुशल कार्यकर्ता बनकर वहॉ कम्पनी का कार्यभार संभाल रही हैं। कम्पनी शुरूआत में 8000 रू0 व रहने खाने की व्यवस्था पर ले गयी थी लेकिन आज वह हुनरमंद होने के बाद 10000 रू0 अपना पारिश्रमिक उठाकर अपने माता-पिता का सहयोग कर रही हैं। राजकुमारी पुत्री सहादेव, मालती पुत्री रामप्रसाद, मोनू पुत्री सुरेशचन्द्र आदिवासी कोल समुदाय की छतैनी माफी व विनोबा नगर गाँव से हैं। वहीं राजकुमारी पुत्री शोभावती जमिरा कालोनी के अनुसूचित परिवार से है।

पाठा के बरगढ़ क्षेत्र में कोल आदिवासी परिवारों की बहुलता तो है लेकिन इनकी शिक्षा का प्रतिशत आज भी बहुत कम है। प्रा. वि. के बाद का पाचवीं से आगे का औसत देखें तो मुश्किल से 5 से 10 प्रतिशत ही मिलता है। इसमें भी अगर लडके-लडकियों का औसत देखें तो वह शायद 3 से 4 प्रतिशत ही आयेगा। मजदूरी पर जीने वाले यह परिवार रोजी-रोटी के लिए इधर से उधर घूमते-भटकते रहते हैं। मजदूरी मे जाते समय यह अपना पूरा परिवार साथ लेकर चले जाते हैं। वहाँ पर इनके रहने- खाने व रूकने की व्यवस्था ठीक-ठाक नहीं होती है जिससे इनके बच्चे न तो अपने गॉव में पढ़ पाते न पलायन पर जाने से इनकी पढाई हो पाती।

आदिवासी परिवारों में आज भी अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने व आगे बढ़ाने की चिन्ता नहीं होती है। वह तो बच्चा बडा होने का इन्तजार करते हैं। थोडा बडा हुआ नहीं कि वे उसे कहीं न कहीं मजदूरी पर लगा देते हैं।

संस्थान ने निरन्तर प्रयास के बाद थोडी सी सफलता प्राप्त की थी। बरगढ़ क्षेत्र के 800 बच्चों को शिक्षा से जोडा था। यही बच्चे-बच्चियां हाईस्कूल, इण्टर करने के बाद कुछ तो आगे पढाई कर रही हैं, कुछ घर का काम या मजदूरी करने लगी है। ऐसी 11 बालिकाएं उस समय खाली मिली थी जिन्हें किसी न किसी कार्य का प्रशिक्षण दिलवाना आवश्यक था। इसी उद्देश्य से 11 बालिकाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण दिलवाया गया था जो आज आत्मनिर्भर होकर अपने पैरों पर खड़ी हैं। यहाँ हुनर प्रशिक्षण में निरन्तरता, तत्परता की अभी बहुत जरूरत है।

जिनके प्रयास ने गाँव में एक नई अलख जगाई

मेरा नाम प्रीतू मिश्रा है, मेरे पिता जी का नाम श्री कामता प्रसाद मिश्र है, मेरी माताजी का नाम श्रीमती अरूणा मिश्रा है। मैं चित्रकूट जिले के कोनिया गाँव की रहने वाली हूँ। मैं अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के अन्तर्गत संचालित चाइल्ड फंड इण्डिया कार्यक्रम की छात्रा हूँ। मेरी शैक्षिक योग्यता एम0 ए0 और योगा में डिप्लोमा है। मैंने चाइल्ड फंड इण्डिया के अन्तर्गत कम्प्यूटर जाना-समझा। मैंने सिलाई एवं ब्यूटीशियन का कोर्स भी किया है। लगभग तीन वर्षों से मैं अपने गॉव में बच्चों को योग व्यायाम, गीत, कहानी और नृत्य सिखाती हूँ ताकि फल परिणाम स्वरूप बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास ठीक-ठीक ढंग से हो सके। मैं सुबह 5:00 बजे जागती हूँ अपनी मॉ के साथ घरेलू कार्यो में हाथ बटाती हूँ। गर्मियों में 5:00 बजे से 6:00 बजे तक और ठण्डियों में 6:00 बजे से 7:00 बजे तक योगा सिखाती हूँ। योगा सिखाने के लिए मैंने अपने गॉव कोनिया के पूर्व माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों से स्थान के बारे में बात किया। अध्यापकों के द्वारा मुझे स्थान के लिए स्वीकृति मिल गई अब मैं नित्य योगा करवाती हूँ। मेरा सहयोग मेरा छोटा भाई रितिक करता है। वह हमेशा मेरे साथ साये के तरीके खडा रहता है।

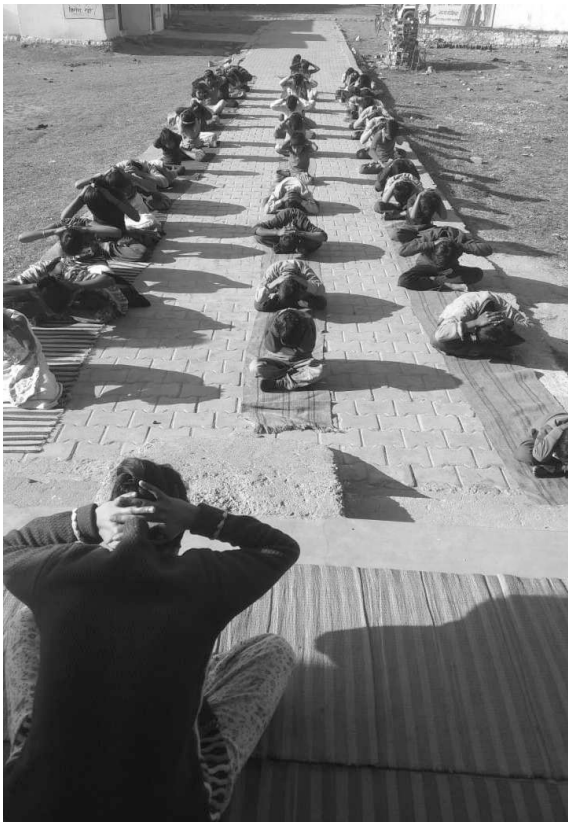

कौशल विकास का एक सच?

❑ **शिवाकान्त** (सामाजिक कार्यकर्ता-बरगढ़)

सूर्या वायर्स प्रा0 लि0 द्वारा जनवरी 2018 से दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना ग्राम विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सहायतित चित्रकूट के रानीपुर भट्ट गाँव में संचालित की गई। चित्रकूट जिले के अन्त्योदय परिवार के नवजवानो ने एक उम्मीद लेकर उत्साह-उमंग के साथ प्रवेश लिया। 105 के लिए व्यवस्था थी। छः माह का प्रशिक्षण था। प्रशिक्षण के बाद नौकरी दिलाने का भरोसा दिया गया था। धूमधाम से सुन्दर भवन में प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ। भोजन के लिए ठेका दिया गया। **प्रशिक्षक योग्य नहीं निकले। सारी व्यवस्था फर्जी सिद्ध हुई। भोजनालय में गुणवत्तापूर्ण एवं भर पेट भोजन नहीं मिला।** 8 घण्टे कक्षा में घेरकर बिठाया गया। लोगों को आशा के अनुरूप काम नहीं मिला। **नौकरी छोडकर भागना पड़ा। आज सूर्यावायर्स प्रा.लि. रानीपुर से गायब है।** भोजनालय, भवन मालिक अपने पैसे हेतु मत्था ठोंक रहे हैं। प्रशिक्षण प्राप्त युवा मारे-मारे घूम रहे हैं। मैं स्वयं एक भुक्त भोगी हूँ। मैं ही नहीं कमलेश- लक्ष्मीपुरवा, नीलेश-नेवादा, उमेश-खोहर, संतकुमार, अनिल, श्याम, शिवशंकर अरवारी, दधिबल, रावेन्द्र, भूपत, महेश आदि इस योजना के शिकार हैं, पीडित हैं। **युवा शक्ति के साथ कितना भद्दा शर्मनाक मजाक है।**

अनेक शिकयतों के बाद भी कहीं से कोई किसी प्रकार का उत्तर नहीं, कार्यवाही नहीं। **अंधेर नगरी ..... कहावत आज भी चरितार्थ है।**

अधगीले–अंगार

❑ रीनासिंह 'रश्मि'

भूखे बच्चों के साथ-साथ, ममता को रोते देखा है
झांझर आँचल में दुःख भरा, संसार समेटे देखा है।

जब दाना नहीं निवालो की, बातें कैसी हो सकती हैं?
सोंचो भूखे मासूमों की रातें कैसी हो सकती हैं?

तपन भूख की निर्मम है, तन की धोती जल जाती है
जलती ज्वाला में, चौंक-2 अपना अस्तित्व बचाती है।

भूख के खातिर अधगीले, अंगार सुलगते देखा है
झांझर आँचल में .....

बेरहम भूख के कारण ही, शिक्षा के सपने टूट गये,
जब विकट गरीबी लिपट पडी, परिवार स्वयं के छूट गये

स्वास्थ्य मिलेगा उत्तम हमको, यह बेमानी लगता है
डर जाते हैं हम विरोध से, सब मनमानी लगता है।।

गिरवी होती मानवता का, संसार उजडते देखा है
झांझर आँचल में .....

अन्तर्मन उठता काँप मेरा अब कदमो में स्पन्दन है,
भूखी बस्ती में मासूमों का जब से देखा क्रन्दन है ।

बेहाल व्यवस्था रही यही, दुनिया कैसी हो जायेगी?
धरनी धीरज को छोड़-छोड फिर चीखेगी चिल्लायेगी।।

व्यभिचारी जिम्मेदारी का आकार बदलते देखा है।
झांझर आँचल में .....

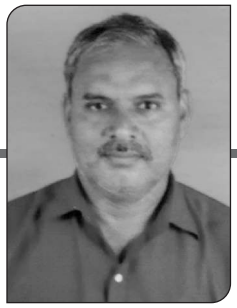

मानिकपुर ब्लाक के कुछ गाँवों की कथा-व्यथा

❑ **देशराज यादव** (सामाजिक कार्यकर्ता)

1. **ऊँचाडीह ग्राम पंचायत-** आँगनवाडी बच्चों का हक नही दे पा रही है। उसकी कोई व्यक्तिगत समस्या होगी। कोटेदार सामान्य व्यक्ति नही होता। उसके विरूद्ध कुछ हो भी नही सकता। गाँव सचिव ही प्रधानी चलाता है। सचिव को प्रधान नही किसी और का निर्देश मानना पडता है। गाँव के अस्पताल को एक रूपया के स्थान पर पाँच रूपया प्रति रोगी लेना पडता है। यदि इन्जेक्सन लगाना पडा तो आराम से 30 रूपये उसे मिल जाते हैं। गाँव में अचानक देखते देखते 50 बकरियां मर जाती हैं। पशु अस्पताल का कोई बन्दा गाँव जाकर देखता है, दवा लिखता है। बाजार से 1 हजार रूपये की दवा आती है बकरियों का इलाज होता है। सरकारी पशु अस्पताल के पास शायद अपनी दवाएं नही होंगी। ज्ञातव्य है ऊँचाडीह, मानिकपुर ब्लाक का बडा गाँव है। प्रारम्भ से आज तक दादू, दबंगों का ही राज रहा है। आज भी उन्हीं की चलती है। यहाँ कोल तथा अन्य दलित परिवारों की संख्या लगभग 500 के आस पास है। सबकी हालत आजादी के इतने वर्षो के बाद भी यथावत है। लेखपाल हमेशा गरीबों की नजर से यहां ओझल रहा है। शराब के नशें में धीरे-धीरे सारे गरीब सम्पन्न परिवार समा रहे हैं।

2. **पत्रकार पुरवा-** पत्रकारों ने अपनी पद यात्रा में कोटा कदैला ग्राम पंचायत के इस पुरवा का नाम पत्रकार पुरवा रखा तब से अब तक (अर्थात 1986 से) यह पत्रकार पुर पत्रकारों की वाट जोह रहा है। कोटेदार, आँगनवाडी तथा उसकी सहायिका से गरीब कोल दुखी और उपेक्षित है।

3. **हरिजनपुर-** गाँव के अधिकांश लोग नशा खोरी के शिकार हैं। गाँव का सरकारी विद्यालय भी बीमार हैं। सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित हैं।

4. **ऐलहा-** अच्छा गाँव है। दारू, जुआँ, पलायन यहाँ की बड़ी समस्या है। स्वच्छ पेयजल का भी यहाँ संकट रहता है। आजीविका का कोई साधन यहाँ नही है।

5. **खिचरी-** मानिकपुर के बगल का गाँव है। 1965 में प्रथक कलोनी बनाकर यहाँ कोलों को बसाया गया था। ब्लाक के पास के इस गाँव की हालत विकास का सच उजागर कर रही है। शौंचालय अपना अर्थ खो रहे हैं। नशाखोरी का खूनी पंजा अधिकांश को जकड रहा है। स्वच्छ पेयजल के लिए गाँव

तरस रहा है। यहाँ की गंदगी स्वच्छ भारत अभियान को चिढा रही है।

6. **गुढवा-** दारू, जुआँ की महामारी में महिला पुरुष दोनों बीमार हो रहे हैं।

7. **सरहट-** ब्लाक से 1 कि0मी0 दूर बसा गाँव है। मुख्य मार्ग पर है। यहाँ की स्थिति भी चिन्तन योग्य है।

8. **बेलहा-** पानी की समस्या का शिकार है। सरकारी विद्यालय बीमार हैं।

9. **गढवा-** ऊँचाडीह ग्राम पंचायत का मजरा है। सभी के आधार कार्ड अभी नही बन पाए हैं। आधार कार्ड न होने से ग्रामीण कई योजनाओं से वंचित हैं।

10. **टिकुरी-** चुरेह केशरूआ ग्राम पंचायत का यह एक मजरा है। 1965 में यह गाँव भी बसाया गया था। व्यवस्था आज तक गाँव को पेयजल नही उपलब्ध करा पायी है। शेष योजनायें भी यहाँ दिखाई नही पड़ती।

11. **केकरामार-** पुराना बंधुवा लोगों का गाँव है। सरकारी विद्यालय बीमार है। आधे गाँव को आज भी स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नही है। संस्थान ने सौर्य ऊर्जा विधि से 45 परिवारों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया है।

12. **हर्दिहा-** सरकारी विद्यालय प्रगति के नित्य नये सोपान चढ़ रहा है? स्वास्थ्य वर्द्धक भोजन विद्यालय में ही बनता है? गाँव भी देखता है। शिक्षा संस्कृति को सराहता है। शिक्षकों को अपने खान-पान, मान-सम्मान पर स्वमूल्यांकन करना चाहिए।

दैनिक जागरण बांदा, 26 सितंबर 2019

फूलकली के घर मददगारों का तांता, मिला शौचालय

पीड़ित परिवार से मिलकर जानकारी लेते कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज मिश्रा ● जागरण

राहत

- पुत्र को बंधक बनाने का आरोप लगाकर मांगी रिहाई
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने की सहायता

संवाद सूत्र, बरगढ़ (चित्रकूट) : कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज मिश्र के ट्वीट के बाद बुधवार को मऊ ब्लॉक के पतेरी गांव की फूलकली के घर मददगारों का तांता लगा रहा। उसने अपने बंधक पुत्र को छुड़ाने की गुहार लगाई। उधर, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के अनाज बैंक से भी मदद मिली। दैनिक जागरण ने इस मुद्दे को प्रकाशित किया था।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज मिश्रा ने बताया कि मंगलवार को फूलमती के मामले को ट्वीट करने पर डीएम शेषमणि पांडेय के संज्ञान लेने पर पूर्ति निरीक्षक उनके घर पहुंचे। प्रधान प्रतिनिधि बृजेश भी मदद की हामी भरी। बुधवार को एआइसीसी प्रतिनिधि लक्ष्मण प्रसाद उनके घर पहुंचे और हालात देखे। कहा कि बुंदेलखंड के कोल आदिवासियों के हालात इस स्थिति से समझे जा सकते हैं। अर्थ एवं संख्याधिकारी राजेश यादव ने भी गड़बड़ी की बात स्वीकारी। कहा कि जल्द समस्या हल की जाएगी। वहीं, जिलाध्यक्ष ने आरोप लगाए कि केंद्र व प्रदेश सरकारें गरीबों की मदद करने का दावा कर रही हैं लेकिन हकीकत सामने है। उधर, फूललीन ने बताया कि गोइया निवासी योगेंद्र पांडेय उनके पुत्र छोटू को कुछ साल पहले अपने साथ ले गया था तब से वह वापस नहीं लौटा। उसको बंधक बनाकर मारपीट भी की गई। इस दौरान वह फफक कर रो भी पड़ी। बताया कि दूसरा बेटा शंकरगढ़ में मजदूरी करता है। गिरिजेश कोल, आशा देवी, राजा वर्मा, सुखपाल वर्मा, कल्लू प्रसाद वर्मा रहे।

उधर, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की ओर से पांच गांवों में चल रहे अनाज बैंक से भी मदद पहुंचाई गई। समन्वयक रीना सिंह ने बताया कि गोइया ग्राम पंचायत के पतेरी गांव में सखी समूह की बैठक के दौरान फूलकली के परिवार को लेकर जानकारी पर अनाज पहुंचा गया। उत्तम स्वास्थ्य का लॉलीपाप दिखाने वाली सरकारें ऐसे लोगों की तरफ ध्यान नहीं दे रही हैं। जयप्रकाश ने बताया कि फूलकली जैसे आखिरी छोर पर मौजूद लोगों की मदद से ही स्थिति संभल सकती है।

दैनिक जागरण बांदा, 2 सितंबर 2019

एकादश अनाज के पोषाहार मंत्र से सुपोषण का यज्ञ

दस्यु प्रभावित कोल आदिवासी क्षेत्र के गांवों में जगी अलख

केस-एक : केकरामार गांव में चार साल के बच्चे दीप कुमार को एक माह तक मोटे 11 अनाजों से बना पोषक मिश्रण खिलाया गया। 11:50 किग्रा की जगह अब उसका वजन बढ़कर 13:60 किग्रा हो गया है। लंबाई भी 96 से बढ़कर 97 सेमी पहुंची है।

केस-दो : अहरी सरैयां निवासी चार वर्षीय गोविंद व समीना पर भी अनाज मिश्रण के प्रयोग से बदलाव दिखे। एक माह में गोविंद का वजन 12 से 14 किग्रा हो गया जबकि लंबाई 97.50 से बढ़कर 99 सेमी हुई है। समीना का वजन 10 से 11:50 किग्रा व लंबाई 100 से बढ़कर 102 सेमी हो गई।

हरिजनपुर गांव में बच्चे को पोषाहार खिलाती संस्थान की प्रेरक भारती ● जागरण

जावेंद्र पांडेय ● बरगढ़ (चित्रकूट)

हमारे घरों में जौ, मक्का, अलसी जैसे जिन मोटे अनाजों को रोज के खानपान से बाहर रखा जाता है और कमतर आंका जाता है, वास्तव में कुपोषण से जंग में वह सबसे बेहतरीन हथियार साबित हो रहे हैं। ये सस्ता होने के साथ आम घरों में आसानी से उपलब्ध हैं। ऊपर दिए गए मामले महज बानगी हैं। चित्रकूट की मानिकपुर तहसील में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान इन्हीं अनाजों का मिश्रण तैयार कर गांवों और कस्बे में कुपोषण के खिलाफ जंग छेड़े हैं। अगस्त 2018 से शुरू हुआ 'एकादश अनाज' के पोषाहार मंत्र से सुपोषण का यज्ञ बच्चों को मजबूत बना रहा है। आठ सौ बच्चों पर अलग-अलग एक-एक माह परीक्षण के बाद बेहतर परिणाम आए हैं। अब ग्रामीण और कोल आदिवासी परिवार इसको लेकर प्रेरित हो रहे हैं।

यह 11 अनाज पोषाहार में शामिल : संस्थान की ओर से बाल स्वास्थ्य को लेकर कोल आदिवासी क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के तहत चाइल्ड फंड योजना की स्वास्थ्य विशेषज्ञ प्रतिमा शाही की देखरेख में पोषाहार तैयार किया गया। इसमें गेहूं, जौ, मूंगफली, रागी, अलसी, मक्का, सोयाबीन, ज्वार, चना, मूंग, काला तिल शामिल हैं। इनमें स्वाद के मुताबिक चीनी मिला कर एक-एक किग्रा के पैकेट बनाकर क्षेत्र के 28 गांवों में बांटे गए।

संस्था कर्मियों की मेहनत ने दिखाया रंग : संस्था ने पोषाहार तैयार कराया और संस्थान में कार्यरत पूनम गुप्ता, शिव मंगल, मीनू और भारती की मेहनत रंग लाई। सेहत से कमजोर बच्चों पर सर्वे करने के बाद ऊंचाडीह, गिदुरहा, रानीपुर कल्याणगढ़, चमरौंहा, सकरौंहा, ऐलहा बढ़ैया समेत 28 गांवों में पोषाहार बांटा गया। पूनम बताती हैं कि गर्भवती मां को टीकाकरण, आयरन, कैल्शियम की गोलियां खा... करती हैं।

> मातृत्व एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत बच्चों को चिह्नित कर अनाज का पोषाहार देने से बदलाव आया है। इससे कोल आदिवासी क्षेत्र में बच्चों के स्वास्थ्य को सुधारने में मदद मिल रही है।
>
> -**गोपाल भाई**, संस्थापक, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान चित्रकूट।

> जन सहभागिता से कुपोषण के खिलाफ जंग लड़ने में मदद मिल रही है। समाजसेवी संस्थाओं को इसी तरह आगे आना चाहिए। इससे निकट भविष्य में सुखद परिणाम आना तय है।
>
> -**डॉ राजेंद्र सिंह**, सीएमओ चित्रकूट।

कुआं पूजन कर दिया जल संरक्षण पर जोर

तिंदवारी क्षेत्र में कुआं पूजन करते डीएम हीरा लाल ● जागरण

संवाद सहयोगी, तिंदवारी : जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने महुई गांव में मंत्रोच्चार के साथ कुआं पूजन किया। अधिकारियों ने ग्रामीणों से कहा कि कुओं का महत्व खत्म होने के बाद जल संकट पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि कुआं-तालाब की पूजा करें और उन्हें जीवित बनाए रखें। ये हमें विरासत में मिले हैं। इन्हें संभालना हमारा दायित्व है।

महुई गांव में श्यामलाल के मकान के सामने स्थित कुएं को प्रधान व सचिव ने रंग-रोगन से सजाया। शनिवार को दोपहर में यहां डीएम हीरा लाल और एसपी गणेश शाहा ने थाना दिवस के बाद कुआं पूजन किया। विधि विधान से हवन-पूजन करने के बाद ग्रामीणों को कुओं का महत्व बताया। डीएम ने कहा कि पहले कुओं से ही पीने का पानी निकाला जाता रहा है। इससे सिंचाई भी होती रही है। लेकिन अब इनकी अनदेखी हो रही है। इसी वजह से लोगों को जल संकट झेलना पड़ रहा है। कहा कि यह जल संरक्षण का देशी व देहाती नमूना है। इसे सभी ग्रामीण अपनाएं। तकनीकी जानकारी हासिल कर रिचार्ज पिट (खंती) जरूर बनवाएं। सभी अपने खेतों में मेड़ बंदी कर वर्षा का पानी रोके। ज्यादा से ज्यादा मेड़ों में पौधारोपण करें। वृक्ष और पानी का अटूट बंधन होता है। एसपी ने कहा कि यह गौरव की बात है कि इस अभियान जन सहभागिता हो रही है। प्रत्येक बच्चा अपने मां-बाप से पुराने रीति-रिवाजों की जानकारी लें। उसे अपनाएं। इस दौरान पीडी आरपी मिश्रा, बीडीओ पीयूष मोहन श्रीवास्तव, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की समन्वयक प्रशंसा गुप्ता, प्रधान सुमित्रा देवी आदि मौजूद रहे।

दैनिक जागरण बांदा, 28 सितंबर 2019 www.jagran.com

बेटे को बंधक बनाने वालों पर शिकंजा, कराया भोजन

मऊ के ग्राम पतेरी में फूलकली के बच्चे को भोजन खिलाते कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज मिश्र ● जागरण

संवाद सूत्र, बरगढ़ (चित्रकूट) : मऊ तहसील अंतर्गत पतेरी गांव में फूलकली के घर का बुझा चूल्हा जल गया है जबकि शुक्रवार को बेटे को बंधक बनाने वाले मामले में आरोपितों पर मुकदमा दर्ज करने की चर्चाएं रहीं। हालांकि पुष्टि नहीं हो सकी। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के प्रयास के बाद जिलाध्यक्ष कांग्रेस पंकज मिश्र की सक्रियता पर यह संभव हुआ है। शुक्रवार को भी उनके घर पर मदद करने वालों का तांता लगा रहा। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की समन्वयक रीना सिंह की पहल पर अनाज बैंक से सबसे पहले गरीब फूलकली के घर अनाज की खेप पहुंची थी। उनसे जानकारी मिलने के बाद कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने मामले को ट्वीट कर शासन प्रशासन की आंखें खोली। गुरुवार को जिलाध्यक्ष पंकज ने फूलकली के घर पहुंचकर उनके बेटे को अपने हाथों से भोजन कराया। पति मुन्ना के चेहरे पर भी खुशी नजर आई। ग्राम प्रधान ने गरीब परिवार के घर पर दरवाजा लगवा दिया है जबकि चारपाई भी पहुंचाई। जिलाध्यक्ष ने बताया कि उनके बंधक पुत्र को मुक्त कराने की मांग जिलाधिकारी शेषमणि पांडेय से करने पर पुलिस ने आरोपितों पर शिकंजा कसा है। जल्द उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज होगा। गांव-गांव ऐसे ही फूलकली जैसे परिवारों को चिह्नित कर प्रशासन से बेहतरी लाने की मांग की जाएगी। डीएम ने बताया कि परिवार को मदद पहुंचाई जा चुकी है। सरकारी सुविधाएं भी पात्रता के हिसाब से दी जाएंगी।

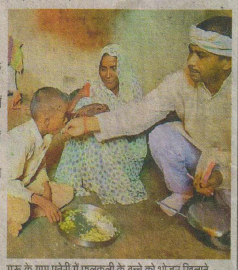

दैनिक जागरण

छूटा कूड़े का थैला, हाथों में आई कलम-किताब

छिवलहा मऊ के गौरी शंकर ने बच्चों को दिखाया स्कूल का रास्ता, बदली जिंदगी की दिशा

जावेंद्र पांडेय ● बरगढ़ (चित्रकूट)

बरगढ़ में कोल आदिवासी बच्चों की लगी कक्षा ● जागरण

31 गांवों में शिक्षा की अलख जगाकर अब तक 342 बच्चों को पहुंचा चुके है स्कूल

मऊ तहसील के दस्यु प्रभावित क्षेत्र बरगढ़ के हड़हा की रूबी और सपना, कोलहाई की प्रीति पढ़ाई छोड़कर कूड़ा बीनने का काम कर रही थीं। इसी बीच छिवलहा मऊ के गौरी शंकर की शिक्षा के प्रति अलख ने इन बच्चों की जिंदगी की दिशा ही बदल दी। अब कूड़े के थैले की जगह उनके हाथों में कलम-किताब हैं। यह तीनों तो महज बानगी हैं। बरगढ़ क्षेत्र के 31 गांवों में शिक्षा की अलख जगाने वाले गौरी शंकर अब तक ऐसे ही 342 बच्चों को स्कूल पहुंचा चुके हैं। साथ में खुद पढ़ाने के लिए अलग से कक्षाएं संचालित करते हैं। धीरे-धीरे उनकी मुहिम से कोल आदिवासी इलाके के अशिक्षित परिवार जुड़ने लगे हैं।

पढ़ाई के दौरान पनपी सोच : मऊ के छिवलहा गांव निवासी गौरी शंकर बताते हैं कि वर्ष 2011 में महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय से एमएसडब्ल्यू की डिग्री लेने के बाद अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान से जुड़कर मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में कु... दौरान तहसील... प्रभावित गांवों... बदला। वापस... दान अभियान... इंटरमं... दौरान... आदि... उनकी... अलग... साका...

सुशिक्षित समाज

इन गांवों में जगा रहे अलख

शिक्षा की यह मुहिम वर्तमान में कोनिया, जमिरा, कोलमजरा द्वितीय, बरगढ़ द्वितीय, हड़हा, बोझ प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को पहुंचा रही है। साथ में भौंठी, पतेरी, तुरगवां, खोहर व भारतपुरवा में शाम को तीन से छह बजे के बीच खुद बच्चों को अतिरिक्त कक्षाओं में पढ़ा रहे हैं। हिंदी, गणित व कला पर जोर रहता है। इससे 31...

किशोरियों को दी गई सीख किया जागरूक

बरगढ़ (चित्रकूट) : अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की ओर से चाइल्ड फंड इंडिया के सहयोग से मऊ ब्लॉक के बरगढ़ में चयनित 50 पीयर एजुकेटर किशोरियों को सीख दी गई। साथ में उनको किशोर अवस्था में आने वाले बदलावों को लेकर जागरूक किया गया। दो दिवसीय नियोजन व समीक्षा बैठ में किशोरियों को किशोर उम्र में होने वाली समस्याओं, स्वास्थ्य एवं प्रजनन, कुपोषण, उसके प्रभाव, माहवारी के समय होने वाले अनुभव, समाज में इसको लेकर फैली भ्रांतियों की जानकारी दी गई। संस्थान के गोपाल भाई के निर्देश पर प्रशिक्षक रीना सिंह ने बताया कि बाल विवाह बेहद दिक्कत देने वाला होता है। इसको लेकर सभी को जागरूक रहने की जरूरत है। किशोर अवस्था में पोषण, टीकाकरण समेत अन्य पहलुओं पर जानकारी दी गई। संसू

कानपुर ● सोमवार ● 26 अगस्त 2019 ● हिन्दुस्तान

किशोरियों को कुपोषण आदि की जानकारी देती रीना सिंह। ● हिन्दुस्तान

किशोरियों को स्वस्थ रहने के टिप्स

बरगढ़। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने बरगढ़ गांव में चयनित आधा सैकड़ा किशोरियों के साथ दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया। बैठक में संस्थान के कर्मचारियों द्वारा किशोरियों को स्वस्थ रहने व कुपोषण से बचाव के तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी देकर जागरूक किया जा रहा है। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा चाइल्डफंड इंडिया के सहयोग से मऊ ब्लाक के बरगढ़ में चयनित 50 पीयर एजुकेटर (किशोरियों) के साथ समीक्षा बैठक की गई।

क्रियान्वयन संस्था

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान

भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पोस्ट-सीतापुर,
चित्रकूट-210204 (उ0प्र0)

दूरभाष : 9415310662

E-mail : absssckt@gmail.com, absssCSO@gmail.com,
Website : absss.in

बुक-पोस्ट

सेवा में,

....

....

....

....

सहयोग

ChildFund India